



# कथा लेखन के क्षेत्र में प्रारम्भ से ही प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराने वाले शिवमूर्ति की कहानियों से हिन्दी कहानी में

कथा रस की वापसी हुई। गाँव ही शिवमूर्ति की प्रकृति लीला भूमि है। इस पर केन्द्रित होकर उनका कथाकार दूर-दूर तक

मँडराता है। इनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन की ऐसी परिदृश्य झलकती है कि हम पढ़ते मसय अपने आपको उस वातावरण में

पहुँचा देते हैं। गाँव की मिट्टी क सुगन्ध उनके हर पात्रों पर मिलती है और भाषा मुहावरेदार तद्भव के भण्डार से उत्ति खाटी

अवधि जो कि किसी अन्य कथाकारों में इतनी अच्छी प्रतिलब्धता देखने को नहीं मिलती। शिवमूर्ति हिंदी कथा साहित्य में एक

ऐसा नाम है, जिसकी अपनी एक अलग पहचान ही नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन के गंभीर सरोकारों और संवेदनाओं की एक विशिष्ट निर्मिति भी है। उनका अनुभव संसार सघन और वर्तमान समय और समाज से जुड़ा है। शिवमूर्ति जो कि यह अनुभव का ही कमाल है कि वह इसी लोक शब्दों को कथा साहित्य में बड़ी बारीकी से विशेषकर पाठकों को एक रसभरी दुनिया में पहुँचा देता है।

शिवमूर्ति, कथा साहित्य, ग्राम्यचेतना, भारतीय साहित्य और समाज, भाषा शैली।

भाषा पर शिवमूर्ति की पकड़ गजब की है। अपनी भाषा से वे पूरा दृश्य पैदा कर देते हैं। उनके बिंब इतने सजीव होते हैं कि कहानियां पढ़ते हुए आप पुस्तक से निकल कर उनके द्वारा वर्णित गांव में टहल रहे होते हैं जब वे लिखते हैं कि घर... घर...

करके ट्रक स्टार्ट हुआ तो ऐसा लगता है कि ट्रक हमारी आखों के सामने से निकला है। भाषा से दृश्य बनाने की ऐसी क्षमता बहुत कम लोगों में होती है। शिवमूर्ति की छवि प्रबन्धक लेखक की नहीं है। वे अपने आप को प्रक्षेपित नहीं करते। यही कारण है कि उन्हें पुरस्कार भी कम मिले हैं और उनकी चर्चा भी अपेक्षाकृत कम हुई है। लेकिन उनका पाठक वर्ग इतना मजबूत है कि वे शिवमूर्ति को ढूँढ़-ढूँढ़ कर पढ़ते हैं। अपनी दो तीन रचनाओं के साथ ही उन्होंने प्रसिद्धि का शिखर छू लिया।<sup>1</sup>

शिवमूर्ति ने अभी तक जितने उपन्यास और कहानी संग्रह लिखे हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से गाँव, गरीबी, दलित, और स्त्री की वकालत करते हैं। उपन्यास— शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन के रचनाकार हैं। इनहोंने 'त्रिशूल', 'तर्पण', और 'आखिरी छलांग' उपन्यासों में लोक-पक्ष की विभिन्न समस्याओं को ओर इंगित किया गया है। शिवमूर्ति के पास अनुभवों का जो जटिल यथार्थ है उससे उनकी यह समझ मजबूत होती है कि रचना में किसके प्रति संवेदनशील होना है और किसके प्रति क्रूर या सरस। यहां शिवमूर्ति कुछ उसी तरह का सन्तुलन साधते हैं जैसी रस्सी पर बांस लेकर चलने वाला नट अपने हुनर से

साधता है। उनकी रचनाओं में तमाम शेड्स हैं। जिससे उनकी लेखीय छवि व्यापक बनती हैं। मैं शिवमूर्ति की रचनाओं की फैन हूँ और मुझे उनसे और भी उम्दा रचनाओं की उम्मीद है।<sup>2</sup>

शिवमूर्ति हमारे समय के ऐसे लेखक जिनकी हर रचना का पाठकों को इंतजार रहता है। उनके पाठकों का एक बड़ा और स्थायी वर्ग है। यूँ देखा जाए तो शिवमूर्ति ने थोड़ा लिखा ज्यादा कहा है क्योंकि उन्होंने मुश्किल से आठ—दस कहानियाँ और तीन लघु उपन्यास अपनी तीस वर्षों का लेख यात्रा में दिए हैं पर वे तीन उपन्यास तीन सो पर भारी है और उनकी आठ कहानियाँ आठ हजार पर। तिरिया चस्तिर, कसाईबाड़ा, अकाल दंड, भरतनाट्यम, केसर कस्तुरी ओर ख्वाजा, ओ मेरे पीर ऐसी कहानियाँ हैं जिनको पढ़कर लेखक को जानने समझने की एक सहज जिज्ञासा आलोचकों और पाठकों को होना लाजमी है। शिवमूर्ति की रचनाओं में कथावस्तु और चरित्र इतने प्रबल है कि वे भाषा के किसी भी ऊपरी तामझाम और छलावे के बिना अपने को पाठकों के बची धमाकेदार तरीके से स्थापित कर लेते हैं। शिवमूर्ति ने बहुत कम लिखा है लेकिन बहुत अच्छा लिखा है।<sup>3</sup>

समाज का निर्माण तथा विकास कैसे होता है? किस दृष्टि से कौन सी बात न्यायपूर्ण है, अन्याय कब और कहाँ व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं? ऑचलिक कथा साहित्य में रेणु के बाद यदि इन महत्वपूर्ण तथ्यों को किसी ने कथा में समेटा है तो वो कथाकार शिवमूर्ति ही है— गाँवों पर लिखने वाले कथाकार शिवमूर्ति के अंदर गाँव, उनका घर, उनके खेत, उनकी गाय, उनके अन्दर का किसान कितना ओर कितने गहरे तक रचा है। मेरा गाँव मेरा घर, मेरा परिवार उनकी आत्मा का कितना बड़ा हिस्सा है। उनका इन सब से जो आत्मिय रिश्ता है वह उनके प्रत्येक उत्तर से यहाँ व्याख्यायित होता है। शिवमूर्ति किसान जीवन को अच्छे से जानते हैं। जानने का मतलब ग्राम्य संस्कृति को, वहाँ के समाज को, परिवार को, वहाँ के राजनैतिक तंत्र और ढाँचे को भली भाँति समझते हैं। वह किसानों की कहानियाँ लिखा रहे हैं, पर समृद्ध की नहीं, वंचित की, शोषित की लिख रहे हैं। वह शोषण की नहीं, शोषित किसानों के जीवन की चुनौतियाँ लिख रहे हैं।..... उन्होंने ग्रामीण जीवन में दलित स्त्री के शोषण को कई स्तरों पर देखा है। उन्होंने उसके शोषण की वह पीड़ा भी लिखी है जिसे वह अपने ही परिवार में अपने ही लोगों के कारण झेल रही है। इसलिए मैं कहूँगा कि उनकी कहानियों के स्त्री चरित्र बहुत प्रभावशाली हैं जिसमें 'तिरिया चिरत्तर' की नायिका को भुलाया नहीं जा सकता। ....शिवमूर्ति के पास बहुत अच्छी भाषा है। ग्राम्य जीवन की, किसान जीवन की ऐसी भाषा इस समय किसी के पास नहीं है। उनके पास तद्भव शब्दों का भंडार है। उनकी कहानियों में पद ही पदार्थ का रूप ग्रहण कर लेता है। यही उनकी भाषा का जादू है। शिवमूर्ति का लेखन विशिष्ट है। उन्हें प्रेमचंद और रेणु के साथ रखना ठीक नहीं होगा। उनका अपना स्थान है। अच्छे लेखक हमेशा ही पाठकों और आलोचकों के बीच सराहे जाते हैं। शिवमूर्ति इसके अपवाद नहीं हैं। अपनी कहानियों से उन्होंने अच्छा स्थान बनाया है इसलिए सराहे जाते हैं।....एक ऐसा लेखक जो अच्छा सार्थक लिखता है। शिवमूर्ति का उपन्यास 'आखिरी छलांग कल्पना से कहीं अधिक भयावक यथार्थ को पकड़ने की ईमानदार कोशिश है। शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन के भरोसेमंद दृष्य मिलते हैं। कायदे से देखा जाय तो ग्रामीण परिवेश की जीवंत दृ श्यात्मकता में पुनरचना करना शिवमूर्ति की ऐसी खासियत है जो समकालीन कथाकारों को उनसे जुड़ने को बाध्य कर सकती है।<sup>4</sup>

आजादी के बाद का भारत, वह भी ग्रामीण भारत अपनी तमाम विद्रूपताओं और जटिलताओं के साथ यदि किसी कथाकार के कथा साहित्य में संजीदगी और व्यापकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है तो वह कथाकार हैं शिवमूर्ति। शिवमूर्ति मन के मनोविज्ञान को बखूबी समझते हैं। उन्हें मन की पकड़ है और आस—पास की परिस्थितियों का अनुभव। किसी भी कहानी में व्यक्त परिवेश का चप्पा—चप्पा जैसे उनका देखा हुआ और जिया हुआ लगता है। शिवमूर्ति की कहानियों में कथ्य जितना

प्रभावशाली और मारक है, उनकी भाषा उससे भी ज्यादा बेधक। आदमी की अच्छाई बुराई को पकड़ना और उसे उन्हीं की भाषा में व्यक्त करना जैसा अनुभवी और उस भाषा को गहराई से जानने वाला विलक्षण कलाकार ही कर सकता है। शिवमूर्ति कि कई कहानियों अपनी पठनियता के बल पर लम्बे समय तक स्मृति में अपना स्थान बनाये रखती हैं। गांवों को लेकर ऐसी पठनीय कथायें हिन्दी साहित्य जगत में सचमुच बेहद दुर्लभ हैं। उनकी कहानियों में चित्रित गांव में हर तरफ आतंक है और यह आतंक सीधी गोलाबारी या हिंसा से नहीं बल्कि महीन स्तरों पर सरकार-राजनीति और सामंती संस्कृति के बीच से पैदा षडयंत्रों के सहारे फैलाया गया है। 'सरी उपमा जोग' कहानी में ऐसा क्या है जो यह कहानी लगभग तीस साल के अंतराल को पढ़ाते हुए आज भी उसी प्रकार ताजा की ताजा है। कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक सहज सरल और तरल कहानी है। .. कहानी को भूल जाओ, लेखक को भूल जाओ लेकिन (इस कहानी की) लालू की माई को कैसे भूला जाय। जहाँ तक मुझे याद है, इस कहानी को मैं कई-कई बार कई-कई प्रत्रिकाओं या इंटरनेट पर पढ़ा। जब भी पढ़ा तो लालू की माई उसी प्रकार सामने खड़ी थी। अपने प्रश्न लेकर। लालू के बप्पा ने भले ही लालू की माई को भुला दिया लेकिन मैं उसके बाद फिर लालू की माई को नहीं भुला पाया।<sup>5</sup>

'त्रिशूल' भारतीय वर्ण व्यवस्था वाले हिन्दू समाज की जातिवादिता धार्मिकता और सामंती मानसिकता को तार-तार कर देता है। त्रिशूल की सफलता और सार्थकता इस बात में भी है कि वह मुस्लिम दलित पिछड़ों के माध्यम से प्रतिरोध और विद्रोह का परिप्रेक्ष्य निर्मित कर जनजागृति का सर्जनात्मक कार्य करता है। इनकी यही जागृति, यही चेतना समानता मानवीय अधिकारों और मूल्यों के लिए प्रतिरोध का परिप्रेक्ष्य निर्मित करता है जिसे त्रिशूल की घटनाओं और पात्रों के माध्यम से देखा जा सकता है। ऊंची जाति के जनार्दन तिवारी यदि छोटी जाति के बाबा को प्रणाम नहीं करते हैं तो बाबा ही उन्हें कहा प्रणाम करते हैं। त्रिशूल भारतीय साहित्य और समाज का ऐसा 'टेक्स्ट' है जिसमें वर्ण जाति, धर्म समप्रदाय राजनीति अर्थनीति और संस्कृति की भेद-मूलक संरचनाएं आपस में इस तरह गुंथी हुई है कि भारतीय लोकतंत्र भी उन्हीं के सहारे सरवाइव कर रहा है 'भेद' को बनाए रखकर। लेकिन जब तक भेद रहेगा तब तक अन्याय भी रहेगा। शिवमूर्ति शब्दों के पारखी हैं। शब्दों को चुनने की और उसे अपनी कथा में बरतने की उनकी तमीज काबिले तारीफ है। शिवमूर्ति की भाषा में निहित बेधकता, सम्प्रेषणीयता, सांगीतिकता, चित्रात्मकता सांकेतिकता, ध्वयात्मकता आदि गुणों के मूल में उनकी शब्द शक्ति को सूंघने महसूसने की क्षमता है वे एक साथ अनीश्वर, लक्षण और व्यंजना का मार्ग इस्तेमाल करने वाले कथाकार हैं। अपने सुदीर्घ रचनाकाल में अत्यन्त संक्षिप्त रचनाओं की सूची प्रस्तुत करने वाले शिवमूर्ति के कथासाहित्य ने आज के दौर में एक दुर्लभ सी लगने वाली ख्याति और विश्वसनीयता दोनों अर्जित किया है। यही कारण है कि अल्प लेखन के बावजूद शिवमूर्ति हिन्दी कथा साहित्य में विश्वसनीयता के किसी शहलमार्क की तरह हैं।<sup>6</sup>

शिवमूर्ति हिन्दी साहित्य में एक ऐसा नाम है जिसकी अपनी एक अलग पहचान ही नहीं बल्कि जो सामाजिक जीवन के गंभीर सरोकारों और संवेदनाओं की एक विशिष्ट निर्मिति के चिंतक भी हैं। शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण जीवन की विषमताएं और अंतर्विरोध नग्न यथार्थ के रूप में अभिव्यक्त पाते हैं। यहां जाति व्यवस्था की गहरी जड़ें मानवीय संबंधों को छिन्न-भिन्न करती दिखायी देती हैं। यहाँ स्त्री और दलित को लगातार गहन यातना और विवशता में जीना पड़ता है। शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन की जटिलताओं और विषमताओं को अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त कथाकार हैं। इनकी भाषा में अभद्र गालियों, मुहावरों व आक्षेपों का नैसर्गिक व भरपूर इस्तेमाल होता है। कलात्मक आलोचना की दृष्टि से देखा जाय तो शिवमूर्ति एक नया ही सौन्दर्य शास्त्र गढ़ते नजर आते हैं। वे अपने स्त्री कथा पात्रों को उतने ही सुन्दर अथवा दीन हीन रूप में हमारे सामने लाकर

खड़ा कर देते हैं जैसे वे वास्तविक जगत में होते हैं। इन कथा पात्रों में बाल-विवाह की त्रासदी व कुपोषण तथा गरीबी की शिकार बहूएँ हैं, पत्नियाँ हैं, माये हैं, वृद्धायें हैं।<sup>7</sup>

शिवमूर्ति की कहानियाँ स्त्री विमर्श की कहानियाँ हैं। उनका स्त्री विमर्श समाज की उन निम्नवर्गीय औरतों के शारीरिक व आत्मीय सौन्दर्य, दैहिक ताप व उत्पीड़न जिजीविषा, प्रतिरोध, राग द्वेष पारिवारिक क्लेश आदि पर केन्द्रित है जो दूर दराज के गांवों में घर जवार की सीमाओं में कैद होकर अपना जीवन गुजार रही हैं। इनमें अनपढ़, गरीब, विस्थापित बाल व्याहता, श्रमिक शिक्षित व उपेक्षित वर्ग की साधारण स्त्रियों का जिंदगीनामा है, जिसमें न हार की फिक्र है, न जीत की। बस संघर्ष ही संघर्ष है, वेदना ही वेदना है। शिवमूर्ति की कहानियाँ दलित अस्मिता को पुनर्परिभाषित करती है। वे दलित अस्मिता के बारे में कहते ही नहीं, उसे सिद्ध भी करते हैं। शब्द दर शब्द, पंक्ति दर पंक्ति, कहानी दर कहानी, वह निरंतर दलित और वंचित वर्ग की अस्मिता का साहित्य रचते रहे हैं। शिवमूर्ति ने कम लिखा है लेकिन थोड़े में ही बहुत लिखा है। जरूरत है, उसमें गुथे हुए सूत्रों की बिलगाने की, उन्हें समझने की। वह अपनी बिल्कुल अलग तरह की कहानियों की दुनिया के फक्कड़ और बिना पगड़ी के सरदार हैं। शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन के विश्वसनीय कथाकार हैं। किसान जीवन को अपनी रचना का विषय उन्होंने किसी साहित्यिक प्रवृत्ति या साहित्यिक आकांक्षा के तहत नहीं अपनाया है। वे ग्रामीण और किसान जीवन के सहज जानकार हैं। उनका व्यक्तित्व रहन बोली बानी- सब कुछ ग्रामीण और किसानी है, एक आंतरिक व्यक्त के साथ। जितने विनम्र हैं उतने ही दृढ़। यह भी लगता है कि उन्हें अपने लेखन के प्रति आत्मविश्वास है। इस आत्मविश्वास का आधार रचित वस्तु की गहरी सूक्ष्म और व्यापक जानकारी है। निजी फास्ट हेंड जानकारी। 'कसाई बाड़ा' और 'तिरिया चरितर' से लेकर 'आखिरी छलांग' तक का जो परिदृश्य है वह समकालीन भारत का यथार्थ रूप है। परिवार, थाना, कोर्ट, कचहरी, स्त्री दलित, किसान, धर्म, सांप्रदायिकता, खेती, नौकरी सबसे जो एक समग्र चित्र निर्मित होता है, वह असुन्दर और दागदार है। सगे सियार भरे पड़े हैं। थाना दारोगा के वास्तविक चित्र कई कहानियों में हैं।<sup>8</sup>

शिवमूर्ति ने झूठ को रूपों में चित्रित कर यह बताया है कि यह सर्वत्र फैला हुआ है। जब वे (शिवमूर्ति) गोष्ठियों में बोलते हैं तो उनका सीधे सादे पूरबी गंबई मानुष का चोला उतर जाता है और हम अपने एक जहीन और सुलझे हुए बुद्धजीवी को पाते हैं जिसका अध्ययन मनन और चिंतन दो टूक और वस्तुनिष्ठ हैं। हां, कटु आलोचना, पीठ पीछे निंदा और किसी को भी नीची नजर से देखने का व्यसन उनमें नहीं है। वैसे भी साहित्यकारों के सभी फितरती ब्यसनों से वे दूर हैं, सिवाय एक के। इस हातिमातई में बस एक ही कमजोरी है- नारी सौन्दर्य के प्रति अदम्य आकर्षण। सुन्दर स्त्री को देख कर वे मन ही मन प्रणाम करते हैं। विधाता की किसी भी अनुपम कृति की सहाराहना न करना इनकी दृष्टि में अक्षम्य अपराध है। शिवमूर्ति में प्यार और अनुराग का वह गहरा भाव ही रहा है जो उनकी कहानियों में केवल मनुष्य के प्रति छलकता दिखायी पड़ता है बल्कि मनुष्येतर जीव जंतुओं के प्रति भी ममत्व और स्नेह में कोई कमी दिखलायी नहीं पड़ती इस सन्दर्भ में अपने समकालीनों के बीच शिवमूर्ति एक ऐसे विलक्षण कथाकार हैं जिनमें संवेदना की अनंत गहरायी है। इसके साक्ष्य उनकी कहानियों में सहज ही उपलब्ध है। शिवमूर्ति अपने समय के अत्यन्त महत्वपूर्ण कथाकार हैं। किसी भी नये हिन्दी पाठक या अहिन्दी भाषी पाठक को हिन्दी साहित्य से स्नेह हो जायेगा यदि उसे शुरु में शिवमूर्ति की कहानियाँ पढ़ने को मिल जये। उनकी सभी कहानियाँ जीवन के अनुभवों से छन कर निकली हुई हैं इसलिए उन्हें पढ़कर आप एक साथ भौचक आहत, उदास और स्पनिदत होते हैं तथा निखर जाते हैं। आप भौचक होते हैं क्योंकि वे जिस संवेदना को प्रशस्त करते हैं उसका मर्म आपके भीतर गड़ जाता है। आप निखर जाते हैं क्योंकि साहित्य, कला आपको उदात्त कर देती है। उनकी कहानियों से आप अपने समकालीन समाज, राजनीति, गरीबी,

जातिवाद, छलप्रपंच और शोषण के अनेकानेक रंग और तरीकों से वाकिफ हो जाते हैं। जिस कथाक्षेत्र से शिवमूर्ति आते हैं वहां उनका किसी से कोई मुकाबला है ही नहीं। वहां फिलहाल वे अकेले राज करते नजर आ रहे हैं।<sup>9</sup>

शिवमूर्ति के उपन्यासों और कहानियों से यह साबित होता है कि हिन्दी कथा साहित्य प्रेमचंद की परम्परा को भूला नहीं है। भारतीय ग्रामीण जीवनकी अनेक त्रासदियों के कथाकार हैं शिवमूर्ति, एक ओर उनकी कहानियों में गांव की स्त्रियों की अपार यातना का दर्द है तो दूसरी ओर उपन्यास में किसान जीवन की तबाही के कारणों और रूपों की पहचान। किसानों की आत्महत्या की समस्या उनके उपन्यास आखिरी छलांग की कन्द्रीय समस्या है।<sup>10</sup>

### fu"d.l&

गहरी अंतर्दृष्टि एवं उचित परिप्रेक्ष्य के अभाव में जहा समाज व राजनीति के बड़े मुद्दे भी सरलीकृत होकर रह जाते हैं। वहीं सरल भी दिखने वाली सतह की सच्चाइयां कैसे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्राप्त करती हैं, इसका एक उदाहरण शिवमूर्ति का उपन्यास त्रिशूल प्रस्तुत करता है। कलेवर में क्षीणकाय होने के बावजूद साम्प्रदायिकता और सामाजिक न्याय के मुद्दे को रोजमर्रा की घटनाओं के माध्यम से शिवमूर्ति ने प्रामाणिक अभिव्यक्ति दी है। उपन्यास में महमूद की त्रासदी भारतीय समाज के सेक्युलर मॉडल की त्रासदी है। बाबरी मस्जिद से जुड़ी घटनाओं एवं मंडल कमीशन की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित यह औपन्यासिक कथा भारतीय जीवन ने साझी संस्कृति एवं सामुदायिक जीवन में आती दरार को अत्यन्त बेबाकी के साथ उद्घाटित करती है।

वर्णाश्रम व्यवस्था एवं ब्राह्मणवादी संस्कृति की नग्न सच्चाइयों का खुलासा करने के साथ-साथ उपन्यासकार ने नयी शक्तियों के उभार के संकेत भी दिए हैं। शिवमूर्ति की लोकभाषा, लोकमुहावरे वे लोकजीवन में गहरी पैठ हैं उनकी ये सारी खूबियां नई अर्थ छवियों के साथ त्रिशूल में उपस्थित हैं। शिवमूर्ति ने नवे दशक में जिन गाँवों को स्थापित किया वे ऑस्ट्रेलिया के गाँव नहीं हैं। वे आज के गाँव हैं। वहाँ के लोगों की निराशा, संघर्ष, जिजीविषा और रागद्वेष उनकी कहानियों में वास्तविक रूप में आये हैं, जैसा बहुत कम लेखकों के कथा साहित्य में पाया जाता है। शिवमूर्ति का कथा साहित्य किसी सिफारिश का मोहताज नहीं है। उनका योगदान ग्रामीण और निम्नवर्ग के पात्रों को उठाने में है, जिन्हें और लोगों ने नहीं उठाया।

### I nHkZ xUfk

1. मेरे साक्षात्कार, शिवमूर्ति, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2013 पृष्ठ संख्या 147 ।
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, विवेकी राय लोकभारती प्रकाशन पृष्ठ सं0 47 ।
3. सृजन का रसायन, शिवमूर्ति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या 50 ।
4. ग्रामीण यथार्थ और शिवमूर्ति की कहानियाँ, प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन पृष्ठ संख्या 57 ।
5. शिवमूर्ति – केशर कस्तूरी, पृष्ठ संख्या 56 ।
6. रामचन्द्र तिवारी – हिन्दी गद्य साहित्य, पृष्ठ संख्या 40 ।
7. वागर्थ पत्रिका, जून 2014, पृष्ठ संख्या 24 ।
8. मंच पत्रिका, शिवमूर्ति विशेषांक जनवरी-मार्च 2011 पृष्ठ संख्या 43 ।
9. ममता कालिया- लमही, अक्टूबर-दिसम्बर 2012 पृष्ठ संख्या 40 ।
10. शिवमूर्ति का कथा संसार प्रख्यात आलोचक रविभूषण दू मंच जनवरी, मार्च 2011 पृष्ठ संख्या 23 ।